कुमारी यशा ने लिया दीक्षा का संकल्प

२५ वर्ष के अन्तराल के बाद छापर में जागा वैराग्य का भाव, आचार्य महाश्रमण को सौंपा समर्पण पत्र

न्यूज छापर, तेरापंथ धर्मसंघ के संस्थापक आचार्य भिक्षु का अभिनिष्क्रमण दिवस रविवार को उस समय छापर जैन समाज के लिए ऐतिहासिक हर्ष का विषय बन गया जब कस्बे की एक जैन समाज की प्रतिभावान छात्रा ने वैराग्य के पथ को अपनाते हुये सांसारिक सुखों का परित्याग कर रविवार को आचार्य भिक्षु के अभिनिष्क्रमण दिवस पर बगड़ी में आचार्य महाश्रमण एवं साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा तक अपना समर्पण पत्र भिजवा दिया। जानकारी के अनुसार अष्टमाचार्य कालूगणी की जन्मभूमि छापर की १९ वर्षीय जैन श्राविका कुमारी यशा दुधोड़िया ने रविवार को अपना समर्पण पत्र बगड़ी में आचार्य महाश्रमण के दर्शनार्थ गये दल में शामिल तेरापंथ सभा के प्रवक्ता प्रदीप सुराणा के मार्फत आचार्य महाश्रमण व साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा तक पहुंचाया। इस दौरान बहिन यशा की माता सुमन देवी दुधोड़िया व दादी कमला देवी दुधोड़िया ने आचार्यप्रवर के समक्ष अपनी स्वीकृति जताई। सभा के प्रवक्ता प्रदीप सुराणा ने बताया कि धर्मसंघ के शासन गौरव मुनि ताराचंद स्वामी, मुनि सुमति कुमार, मुनि देवार्य कुमार व मुनि आदित्य कुमार की छापर सेवा केन्द्र में चाकरी के कार्य काल में कुमारी यशा की भावना वैराग्य के प्रति जागृत हुई जो वर्तमान व्यवस्थापक शासनश्री मुनि सुमेरमल सुदर्शन व तेरापंथ धर्मसंघ के जनसम्पर्क प्रभारी मुनि जयन्त कुमार की प्रेरणा से क्रियान्विती में बदल गई फलस्वरूप अष्माचार्य कालूगणी की जन्म भूमि छापर में २५ वर्ष के लम्बे अन्तराल के बाद वैराग्य का पथ प्रशस्त हो गया तथा कस्बे के जैन धर्मावलम्बियों के लिए ऐतिहासिक पल बन गया। इसी विषय को लेकर सोमवार को कस्बे के भिक्षु साधना केन्द्र में सेवा केन्द्र व्यवस्थापक मुनि सुमेरमल सुदर्शन के सानिध्य में धर्मसभा हुई जिसमें मुनि जयन्त कुमार ने कहा कि २५ वर्ष के बाद छापर की तपों भूमि से वैराग्य के भाव प्रस्फुटित होना न केवल कस्बेवासियों के लिए अपितु सम्पूर्ण धर्मसंघ के लिए गौरवमयी बात है। उन्होंने कहा कि आचार्य महाश्रमण ने जिस लक्ष्य को अर्जित करने के लिए सेवा केन्द्र का कार्यभार सौंपा उसमें कुमारी यशा के इस निर्णय के बाद उनमें उत्साह व विश्वास की भावना जागृत होगी।

दीक्षा के लिए लेगी प्रशिक्षण

बीकॉम फाइनल की परीक्षा दे रही कस्बे की प्रतिभावान छात्रा यशा दुधोड़िया द्वारा वैराग्य का मार्ग अपनाने के पश्चात अब वह सांसारिक जीवन का परित्याग कर लाडनूं के परमार्थिक शिक्षण संस्थान में दीक्षा का प्रशिक्षण लेगी। सभा के प्रवक्ता प्रदीप सुराणा ने बताया कि बहिन यशा वहां पर अपने प्रशिक्षण काल में आचार्य महाश्रमण के इंगितानुसार अपने जीवन को जैन दीक्षा के लिए समर्पित करेगी।

परिवार की निष्ठा बनी सहायक

वैराग्य का मार्ग अपनाने वाली बहिन यशा का पूरा परिवार संघ व संघपति के प्रति निष्ठावान है जो उनकी दीक्षा के निर्णय मं काफी सहायक सिद्ध हुआ है। यशा के दादा रूपचंद दुधोड़िया तेरापंथ सभा के उपाध्यक्ष पद पर है वहीं दादी कमलादेवी दुधोड़िया तेरापंथ महिला मण्डल की अध्यक्ष पद पर रह चुकी है। यशा की माता सुमन देवी दुधोड़िया महिला मण्डल की उपमंत्री पद पर है वहीं पिता नरेन्द्र दुधोड़िया तेरापंथ युवक परिषद के संरक्षक है। यशा की एक मात्र बडो बहिन हर्षलता दुधोड़िया तेरापंथ कन्या मण्डल की संयोजिका पद पर कार्यरत है।